'वैश्वीकरण ने दलितों के संघर्ष को भटका दिया है'

प्रश्नोत्तर

अपने उपन्यास 'जूठन' के जरिए **ओमप्रकाश वाल्मीकि** *ने हिंदी साहित्य को दलित जीवन के जिन पहलुओं से अवगत कराया, वह काफी हद तक नया और कड़वा था. इसके बाद की उनकी किताबों ने भी दलितों की मुक्ति की बहस को हिंदी साहित्य के केंद्र में बनाए रखा है. सदियों का संताप, अब और नहीं, सलाम और दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र के लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि से* **रेयाज उल हक** *की बातचीत*

दलित साहित्य से अभी कौन-से अनछुए विषय बचे रहे गए हैं?

लोगों का जीवन बदलने से अनेक जटिलताएं भी आई हैं. उनकी प्राथमिकताएं बदल रही हैं. ऐसे में लेखन की चुनौतियां भी बढ़ रही हैं. जीवन की जो आंतरिक धारा है, अभी उस पर लिखा जाना बाकी है. आदिवासी, रेहड़ीवाले, खानाबदोश, फुटपाथ पर जीनेवाले, प्रवासी मजदूर...कितना कुछ साहित्य में पूरा नहीं आ पाया है. भूमंडलीकरण जिस तरह जीवन और समाज को नष्ट कर रहा है, कोई भी सुरक्षित नहीं है- यह भी दलितों द्वारा लिखा जाना है. इसके सबसे बड़े शिकार दलित ही हैं. भुखमरी और बेघरों के देश के साहित्य में ये सारी बातें अभी पूरे विस्तार से दर्ज होनी हैं.

आप खुद क्या लिखने जा रहे हैं? कुछ नई योजनाएं, जिनपर काम कर रहे हों?

गोहाना की घटना पर एक उपन्यास लिख रहा हूं. बिहार की पृष्ठभूमि पर एक फिल्म की कहानी लिखने का प्रस्ताव है. मैं पूरे देश के दलित साहित्य का अध्ययन करना चाहता हूं, ताकि विभिन्न भाषाओं के दलित साहित्य की समानताओं और अंतरों का पता लगे. यह देखना थोड़ा दिलचस्प है. जैसे गुजरात के दलित लेखक गांधी के खिलाफ नहीं बोलते, जबकि पंजाब-हरियाणा के लेखकों के साथ ऐसा नहीं है. जब आप लोगों की जरूरतों, आकांक्षाओं-आशाओं, पीड़ा और संघर्ष को नहीं जानेंगे, तब तक कैसे उनके बारे में कुछ कह सकते हैं? कैसे उनसे रिश्ता बना सकते हैं? उनसे जुड़ने के लिए यह जरूरी है कि आप उनके स्तर पर आकर उन्हें जानें.

आपने अभी एक बातचीत में कहा- और दलित संघर्ष की यह एक प्रमुख स्थापना है-कि दलितों की संस्कृति हिंदू संस्कृति से अलग है. इस स्थापना का आधार क्या है?

सब-कुछ अलग है. रीति-रिवाज, रहन-सहन, मान्यताएं-परंपराएं, यहां तक कि टोले भी. दलितों के अपने अलग देवी-देवता हैं. यह अलग मुद्दा है कि देवी-देवता होना ही गलत बात है. निचली जातियां हिंदू धर्म का हिस्सा कभी नहीं रहीं. उन्हें तो बीसवीं सदी में हिंदू धर्म में तब शामिल किया जाने लगा जब वोट की बात आई. इसे यों भी देखिए कि जहां हिंदू धर्म है वहां जाति है. जहां नहीं है वहां जाति भी नहीं है. पूर्वोत्तर के राज्यों में जाति नहीं मिलेगी क्योंकि वहां हिंदू धर्म नहीं है. लेकिन फिजी और दूसरे देशों में जाति है. जो लोग परंपरा और संस्कृति की बात करते हैं वे बताएं कि परंपरा के अनुसार गोमूत्र तो अमृत समान है फिर आप इसे मेहमानों को सर्व क्यों नहीं करते?

कुछ दलित विचारकों जैसे कि कांचा इलैया का कहना है कि दलितों की शिक्षा-दीक्षा भी अंग्रेजी में होनी चाहिए, क्योंकि स्थानीय भाषा में पढ़ने के कारण दलित पीछे रह जाते हैं, जबकि ऊंची जातियों के छात्र विज्ञान आदि की शिक्षा अंग्रेजी में हासिल करने के कारण आगे बढ़ जाते हैं...

दलित पढ़े-लिखे परिवार से नहीं आते. वे तो मुश्किल से ही स्कूल जा पाते हैं. वह भी सरकारी स्कूलों में. इनकी हालत आप जानते हैं. ऐसे में आप यह कैसे सोच सकते हैं कि दलित बच्चे हर विषय अंग्रेजी में पढ़ लेंगे? यह तब संभव है जब अलग से अंग्रेजी पढ़ाई जाए.

आपने शुरू में इसका जिक्र किया है कि कैसे वैश्वीकरण दलितों को भी अपना शिकार बना रहा है. यह किन प्रक्रियाओं के जरिए सामने आ रहा है?

वैश्वीकरण ने दलितों के संघर्ष को भटका दिया है. पिछले दो दशकों में पूरे समाज के एक तबके के साथ-साथ दलित समुदाय के एक हिस्से की समृद्धि बढ़ी है. अब उन्होंने अपने लिए अच्छा स्टेटस हासिल करने को चुनौती मान लिया है. लेकिन वे ऐसा जाति के सवाल को परे रखकर रहे हैं, जाति छुपाकर कर रहे हैं. यह समृद्धि सबके लिए संभव नहीं है. हम पूरे दलित समुदाय की बात कर रहे हैं. उनके लिए जीवन की स्थितियां और संघर्ष और जटिल हुए हैं.

साहित्य अकादमी ने हाल में सैमसंग से अनुबंध किया है. वह टैगोर के नाम से लेखकों को पुरस्कार देगी. इस पुरस्कार के लिए पैसा सैमसंग देगी. इसका बड़े पैमाने पर विरोध भी हो रहा है. आपका क्या कहना है?

हम तो पहले से ही कहते रहे हैं, अकादमी में साहित्य नहीं है. धंधा होता है वहां. लेखक आज तक उसके खिलाफ कुछ नहीं कर पाए. अब उसने एक विदेशी कंपनी के साथ मिलकर इस धंधे का विस्तार किया है.